"सांसारिक व्यवहार"

बच्चों का कल्याण केवल मां-बाप के मर्यादित व्यवहारिक जीवन तथा अमल अथवा चरित्र पर ही निर्भर करता है निश्चित रूप से। केवल बच्चों के स्वंय के कर्म फल पर उनका उत्कृष्ट विकास असम्भव ही है निश्चित रूप से। यदि आप चाहते हैं कि आपके बच्चे जो कल का निश्चित भविष्य हैं ईमानदार-मेहनती तथा छल कपट इत्यादि से रहित अच्छा विकसित जीवन जीने वाले-तपस्वी ऋषि बनने के मार्ग का अनुसरण करने वाले

प्रत्यक्ष बनें तो पहले निश्चित रूप से आप स्वंय को भी इसी दुर्लभ पथ का राही निश्चित रूप से दृढ़ निश्चय के साथ अवश्य आवश्यक रूप से घोषित करना ही पड़ेगा यकीनी तौर पर । दूसरों को उपदेश दो और स्वंय केवल घोर-2 नर्कों का सामान बांधों इस तरह के कार्यो से उत्कृष्ट उपलब्धि होनी केवल असम्भव ही है निश्चित रूप से । नियम है कि पहले स्वंय "नियम मर्यादा" में वरतो फिर दूसरों को संदेश दो ! फिर कुछ ब्यान देने अथवा कहने की कुछ आवश्यकता ही नहीं है आपका स्वंय का निश्चित मर्यादित जीवन ही केवल दुर्लभ मार्ग दर्शन है निश्चित रूप से । बिना पढ़े बन्द किताब आप की ज़िन्दगी की स्वंय अपने आप ब्यान देने में पूर्ण समर्थ है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । तेग बहादुर नाम की आत्मा का चौबीस वर्ष का गुफा बना कर के जमीन में खामोश बैठना तथा तेजा कमला (मूर्ख) कहलाना स्वयं को खुद ही ब्यान देने में पूर्ण समर्थ है । अब आप सोचो आप के "ढोल पीटने" का "तेग बहादुर" इत्यादि के नाम विशेषो का क्या अर्थ रखता है ? अगर कुछ रखता है तो पहले हमें खुद को अपने स्वंय के गिरेबान में झांक करके अवश्य देख ही लेना चाहिये निश्चित रूप से फिर अवश्य सभी अर्थ विशेष प्रत्यक्ष हो ही जायेंगे यकीनी तौर पर ।

"रहत-मर्यादा" किसी मत-धर्म तथा देश -जात विशेष के लिये नहीं होती अपितु जो भी आत्मा इस मृत लोक अथवा

शमशान भूमि में मनुष्य जून नाम के पिंजरे अथवा मुर्दे या कब्र विशेष में प्रत्यक्ष हो जाती हैं तो उसके केवल स्वंय के निज कल्याण अथवा स्वंय को सदा के लिये इस कब्रिस्तान या पिंजरो अथवा कब्र विशेषो से मुक्त हो जाने का निश्चित तथा आवश्यक साधन विशेष है "रहत-मर्यादा" अनुसार "व्यवहारिक जीवन" जीना यकीनी तौर पर निश्चित रूप से। बच्चों को खास तौर पर सभी प्रकार के विकृत मिडिया विशेषो से अवश्य आवश्यक रूप से अलग ही रखना श्रेयस्कर है निश्चित रूप से। बच्चों को केवल स्वार्थ तथा वासना रहित धार्मिक और व्यवहारिक चारित्रिक वातावरण ही श्रेष्ठ लाभदायक खुराक है निश्चित रूप से बच्चों की अच्छी सेहत के लिये। मिसाल के तौर पर जब आप बच्चे को स्थिति से बचने के लिये कहते हो कि फोन पर बोल दो फोन करने वाले को कि आप बाथरूम में हो कुछ देर बाद फोन करना। फिर कुछ देर बाद फोन आने पर आप आफिस के लिये निकल चुके हो ऐसा बच्चे को कहना पड़ता है तथा आफिस में फोन करने पर आप दुर्लभ साईट विशेष के लिये निकल चुके होते है। फिर साईट पर आप बहुत व्यस्त रहते हो। यानी के आप से फोन करने वाले का सम्बन्ध स्थापित हो ही नहीं पाता अनेक अकथ प्रयन्नों को करने के बावजूद आप चालाकी से बचते ही रहते हो। तब बच्चा समझ जाता है आप के इस दुर्लभ पाठ तथा शिक्षा को

कि झूठ-चालाकि तथा छल ही केवल सत्य है निश्चित रूप से । सिर्फ ध्यान यह रखना है कि आप की इस "दुर्लभ चोरी" विशेष की केवल पकड़ नहीं होनी चाहिये अर्थात आप पकड़ में नहीं आने चाहिये निश्चित रूप से प्रत्येक काल में सभी प्रकार के नाजायज तरीकों अथवा ढंग विशेषो का प्रयोग या उपयोग करने के बावजूद आप बचे रहें यकीनी तौर पर आप का केवल यही दुर्लभ सत्य है । यदि पकड़े गये तो नकली चोर नहीं पकड़े गये तो निश्चित रूप से धर्मात्मा राजा हरीशचन्द्र के भी पिता जी के भी पिताजी साबित हो गये यकीनी तौर पर आवश्यकतानुसार । अब आप जितना मर्जी उपदेश अथवा ज्ञान मंहगे-2 स्कूल अथवा कालेजों विशेष में देते अथवा बांटते रहो लिख-2 कर के मोटे-2 ग्रन्थों विशेषो के जरिये कुछ फर्क नहीं पड़ने वाला बच्चे की सरल बुद्धि पर । आप की इस अकथ मेहनत अथवा मंहगे-2 ढंगों विशेष का विकास के नाम पर केवल "एक" कोरा सा पाखण्ड विशेष ही साबित होगा निश्चित रूप से । जो दुर्लभ पाठ विशेष आपने अपने बच्चे को केवल अपने स्वंय के झूठे अथवा नकली व्यवहार से पढ़ा अथवा सिखा दिया है ना निश्चित रूप से स्वंय के घर में ही यही दुर्लभ पाठ विशेष बच्चा अपने जीवन में बार-2 दोहरायेगा तथा आपकी अगली पीढ़ी को भी केवल यही दुर्लभ झूठ अथवा नकली संस्कृति ही विरासत में उपलब्ध होगी निश्चित रूप से यकीनी तौर पर गांठ

बांध लो । कन्या की शिक्षा आवश्यकतानुसार यथा संभव कन्याओं के विद्यालयों में ही वांछनीय है निश्चित रूप से वस्त्र भी विशेष रूप से अंग ढकने का साधन होना चाहिये निश्चित रूप से । अपने सभी प्रकार के साधारण अथवा विशेष-2 कार्यो को आप केवल एक परमात्मा अथवा अकाल पुरख परमात्मा के ही ध्यान में रख कर के शुरू अथवा सम्पन्न करना श्रेयस्कर अथवा कल्याणकारी है निश्चित रूप से यकीनी तौर पर । प्रत्येक कार्य को शुरू करने से पहले खूब विचार कर कर्म की गति को सामने रख कर के ही फैसला करना श्रेयस्कर है निश्चित रूप से । आप को अपनी विशेष मंजिल "प्रभू मिलन" प्रत्येक काल में निश्चित रूप से अवश्य ध्यान में रखनी चाहिये । आपके शुरू किये जाने वाले कार्य से आप की ये "दुर्लभ मंजिल" विशेष आसान होगी या दूर इस पर प्रत्येक उपलब्ध अवस्था में बार-2 अवश्य विचार कर लेना ही केवल श्रेयस्कर है निश्चित रूप से आत्मिक कल्याण हेतू आवश्यकतानुसार । आप के ज्यादातर कार्य तो ऐसे हैं कि न तो दीन ही सुधरता है और न दुनिया में ही कुछ उपलब्ध होना नजर आता है निश्चित रूप से । पर फिर भी आप उसे करने में केवल बहुत व्यस्त हैं निश्चित रूप से । जैसे आप इंतजार करते हैं सारा दिन कि शायद वो आज ही आ जाये क्योंकि उसने कहा था कि मैं तुमसे मिलने आऊंगा उस "दुर्लभ विशेष" के आने का कुछ भी

निश्चित नहीं था पर फिर भी आप उसके "दुर्लभ विशेष मिलन" की कल्पना संजोये दुर्लभ तैयारी में केवल बहुत व्यस्त रहते हैं निश्चित रूप से पर आपको यह दुर्लभ दर्शन उपलब्ध नहीं होते। या आप घर से "विशेष दुर्लभ तीर्थ" पर निकल पड़ते हैं कि मैंने सोचा बहुत दिन हो गये मिले नहीं अथवा खबर पता नहीं चली- सुख होये सही चलो मैं ही पता कर आंऊ अथवा मिल आंऊ। आपके इस "दुर्लभ आविष्कार" का क्या नतीजा प्रत्यक्ष होता है कि जब आप वहां पहुंचते हैं तो क्या देखते हैं कि सामने वाली के "दुर्लभ मायके" का "दुर्लभ विशेष मेहखाना" चरितार्थ उपलब्ध है तथा वो आप के "दुर्लभ खास" बेचारे अपनी इस प्लेनेट की "दुर्लभ खास उपलब्धि" (तीनों मुल्कों में दुर्लभ) यानी के अपनी प्यारी-2 सी सालियों विशेष को प्रसन्नचित करनें में अत्यन्त व्यस्त हैं निश्चित रूप से। वे समझ नही पा रहे थे कि कैसे अपना कलेजा निकाल कर आगे धर दें। जन्मों-2 की "दुर्लभ प्यास" विशेष जो ठहरी बेचारे जीजा जी की। जब वे प्यार से "जीजा जी" बुलाती थीं तो उन्हें ऐसा अनुभव होता था कि जैसे घंटिया सी बजने लगी हैं कानों में। इन "दुर्लभ घंटियों" को सुन-2 कर वे इतने मस्त हो जाते थे कि उनकी आंखे मुंद जाती थीं तथा उन्हें स्थिति का कुछ भी भान ही नहीं रहता था। यदि आप को ऐसी दुर्लभ घंटी सुनने को नहीं मिली तो अवश्य आपके भाग्य खोटे हैं निश्चित रूप

से जरूर आपकी माता श्री ने आपके जन्म होने पर केवल काले-2 कोयले बाटे होगें नहीं तो क्यों आज आप को ऐसी "दुर्लभ उपलब्धि" प्रत्यक्ष नहीं हुई ? कृप्या दुखी मत होईये । प्रभू सब की लाज अवश्य रखता है देर से ही सही पर अपने अंश को रोता हुआ कभी नहीं देख सकता । अवश्य प्रभू की विशेष दया से अगले जन्मों में सही आपको भी ये "दुर्लभ उपलब्धि" इस "दुर्लभ प्लेनेट" की अर्थात ये प्यारी सी घंटी अवश्य प्रत्यक्ष होगी निश्चित रूप से । तभी आप भी इस "दुर्लभ घंटी" को सुनते ही चारों खाने चित हो जाया करोगे और फिर समझ सकोगे कि "शहीद" की क्या परिभाषा हो सकती है । भला खुद शहीद हुए बिना कैसे इस दुर्लभ स्थिति को अनुभव किया जा सकता है व्यवहारिक रूप से ? ऐसे थोड़े ही कहा है कि ये दुर्लभ उपलब्धि आधी घरवाली होती है निश्चित रूप से । यदि आप की परवा भी नहीं है तो इसमें भी केवल आप की "माता श्री" का ही दोष है निश्चित रूप से जिन्होंने "छक्कों" को अवश्य निराश किया होगा वरना आपको भी "अभाव भरे" दिन क्यों देखने के लिये मजबूर होना पड़ता ? "सारी खुदाई एक तरफ जोरू की बहना चारों तरफ !" फिर ऐसी दुर्लभ व्यस्त स्थिति में भला कौन हम जैसे दो पैर के जानवर जिनकी शक्ल बेशक इन्सान से अवश्य मिलती जुलती ही है निश्चित रूप से केवल एक दुम भर की अवश्य कमी है शायद

अगले जन्म विशेष में ये कमी भी प्रभू अवश्य पूरी कर ही देंगे हमारी निजी विशेष आवश्यकता को ध्यान में रख कर के निश्चित रूप से के आगे भला कौन घास धरें अथवा डाले आखिर ये घास भी तो इस घोर कलयुग में "दुर्लभ हीरा" ही साबित हो रही है निश्चित रूप से । सच्चे परमार्थी की ज़िन्दगी उस दिन शुद्ध होती है जिस दिन वह ऐसा सोचता है कि ये सिर अथवा घर पर मिलने को आयी "दुर्लभ सी महामारी" से कैसे शीघ्र छुटकारा प्राप्त होना सम्भव है सदा के लिये निश्चित रूप से । या आप बैटरी को ही चार्ज करने में व्यस्त हैं ताकी ये "महामारी दुर्लभ" आप के ध्यान विशेष को भंग करने की निश्चित रूप से ठीक तरह से कार्य करती रहे आप के गले में बंध करके अथवा गले का श्रृंगार बन कर आपके "दुर्लभ मानुख के जन्म" को "हज्म" करती रहे निरन्तर दिन रात बिना रूके निश्चित रूप से । ज्यादातर "दुर्लभ प्राणियों" ने ये "श्रृंगार" अपने दुर्लभ गले का केवल बिना अर्थ स्वंय को डुबोने के लिये ही कर रखा है निश्चित रूप से बिना मतलब एक मीठा सा फंदा विशेष प्यारी सी आसान मौत मरने के लिये केवल यकीनी तौर पर । दावा सन्तमत का, घंटी गले में बांध रखी है ! जिस घड़ी अथवा पल प्रभू को भूल गये उसी घड़ी अथवा पल आपने स्वंय केवल अपने लिये अपने ही निज हाथ से नरक लिख कर अपने ही गले में टांग लिया है निश्चित रूप से । वही पल

केवल आप को बचायेगा जिस दुर्लभ घड़ी में आप ने प्रभू को याद रखा है निश्चित रूप से । "सच वेला-मूरत सच जिस सचे नाल पिआर । सच वेखणा-सच बोलणा-सच्चा सभ आधार ।" (3-565) विवाह-शादी सभी प्रकार के समारोहों में सभी प्रकार के लग्न-मुहूर्त इत्यादि केवल एक बड़ा लेकिन मीठा सा पाखण्ड अथवा धोखा है निश्चित रूप से ठगों अथवा दलालों विशेष का । सृष्टि कर्म पर आधारित है निश्चित रूप से । फल केवल कर्म से ही प्रत्यक्ष उपलब्ध होता है । और ये दुर्लभ कर्म केवल आप का अपना स्वंय का ही कमाया हुआ होता है निश्चित रूप से जिसका फल अनन्त कल्पों के बाद भी अनन्त विशेष-2 प्रयत्नों के बावजूद कभी आंशिक रूप से भी बदलना केवल असम्भव ही है निश्चित रूप से गांठ बांध ले । अच्छा फल केवल तेरे स्वंय के अच्छे पुरुषार्थ से ही प्रत्यक्ष उपलब्ध होना सम्भव है निश्चित रूप से । और अच्छा केवल प्रभू को याद करना अथवा धन्यवाद करना है यकीनी तौर पर । जिसे याद करने के लिये तेरे पास समय ही उपलब्ध नहीं होता है इस "फालतू से कार्य" विशेष के लिये निश्चित रूप से अपने स्वंय के व्यस्त जीवन में खास तौर पर । कुल पुरोहित ऋषि विशिष्ट जी जिनके लिये तीनों दुर्लभ काल हाथ पर आंवले की तरह से प्रत्यक्ष थे के द्वारा "भगवान रामचन्द्र" जी के "राज तिलक" की "शुभ घड़ी-लग्न मुहूर्त" निकाला गया था

नतीजा उसी "शुभ घड़ी लग्न मुहूर्त" में ही भगवान रामचन्द्र जी को चौदह वर्ष का बनवास प्राप्त हुआ अथवा उपलब्ध हुआ। उन्हीं के अपने स्वंय के दुर्लभ पिता श्री से जिन से कि उन्हें राज उपलब्ध होना था तथा जिन्होंने स्वंय ही ये "शुभ लग्न मुहूर्त" बड़ी सावधानी तथा समर्थ विशेष-2 बुद्धिमानों से विचार कर प्रत्यक्ष उपलब्ध करवाया था उन्हीं दुर्लभ पिता श्री नें ही अपने ही प्यारे दुर्लभ पुत्र राम को वन जाने का आदेश सुना दिया अथवा देना पड़ा। नंगे पाँव उसी शुभ घड़ी लग्न मुहूर्त में ही सूर्य डूबने से पहले निश्चित रूप से। "मर-मर जीवै ता किछ पाऐ नानक नाम वखाणै।" अर्थात बिना जीते जी मरे जीव को कभी भी कुछ भी सुपने में भी उपलब्ध होना केवल असंभव लफज को ही सार्थक बनाना है निश्चित रूप से।

विवाह इत्यादि विशेष-2 समारोहों में नाचने कूदने के बजाये "संयम" में रह के "स्वाध्याय" करना श्रेयस्कर है। तथा सभी फेरे इत्यादि की क्रिया शान्त स्थान विशेष इत्यादि गुरूद्वारे में ही सम्पन्न करनी वांछनीय हैं। इस क्रिया में केवल बहुत नजदीकि सम्बन्धियों को ही कम से कम संख्या में ही केवल प्रत्यक्ष उपलब्ध होना श्रेयस्कर है। सभी प्रकार का "रंग तमाशा" केवल स्वंय के डूबने का सामान बांधना है निश्चित रूप से। सभी केवल आवश्यक प्राणी दोनों पक्ष के केवल स्वंय के निजी साधनों

से गुरूद्वारे अथवा स्थान विशेष पर उपलब्ध हों । सभी आवश्यक साधन अथवा सामान साथ बांध कर ही केवल घर से चलें अन्न-जल अथवा प्रसाद विशेष सहित । यह क्रिया सुबह शीघ्र ही यथा सम्भव सुच्चे मुंह कर लेनी ही वांछनीय है । प्रमाण के लिये तस्वीरें उतारनी निश्चित रूप से अवश्य आवश्यक हैं । सभी प्रकार की पड़ताल पहले से ही करनी आवश्यक है निश्चित रूप से । फल कर्म तो पहले से ही निश्चित हैं पर देख कर मक्खी कोई नहीं खाता यह पुरूषार्थ नियमानुसार आवश्यक है । जहां लोभ की प्रधानता हो वहां सम्बन्ध नहीं बनाना ही श्रेयस्कर है । यादगार के लिये दोनों प्राणी एक रिंग को ही तबदील करें यही वांछनीय है । स्त्री भोग का विषय कदापी हर्गिज नहीं है निश्चित रूप से यह ध्यान पुरूष को सदा रखना ही वांछनीय है । "कन्या" एक न हज्म हो सकने वाला "दुर्लभ दान" ही है निश्चित रूप से इसे आप आसानी से हज्म नहीं कर सकते । फिर और ढंग या त्यौहार आदि विशेष के नाम पर जो कुछ चाटते अथवा एकत्र करते रहते हो ये केवल अपनी स्वंय की "आत्मिक मौत" मरने का निश्चित रूप से सामान बांधना मात्र है यकीनी तौर पर । इन बातों का "दुर्लभ अर्थ" आप भूल चुके हो कि जहां गांव की कन्या ब्याही जाती थी वहां के गांव का पानी पीना तो दूर उस गांव के पास से भी गुजरना ठीक नहीं समझा जाता था कारण केवल अपने स्वंय के कल्याण

हेतू ऐसा आवश्यक है निश्चित रूप से । सच्चे परमार्थी की स्थिति लेने वाले स्थान पर सदा दुर्लभ ही रहनी चाहिये निश्चित रूप से तथा देने वाले स्थान पर उसे सदा निश्चित रूप से प्रत्यक्ष उपलब्ध होना ही केवल उस के स्वंय के लिये अवश्य आवश्यक रूप से निज कल्याण के हेतू निश्चित रूप से कल्याणकारी साधन है यकीनी तौर पर स्वाभाविक रूप से । "सगन" कम से कम अर्थात एक रूपऐ तक लेना ही केवल वांछनीय है निश्चित रूप से । इन्हें भी अलग एकत्र कर उसमें और स्वंय का साधन विषय मिला करके गरीब जरूरत-मंदो में तकसीम करना ही केवल कल्याणकारी है निश्चित रूप से । कीचड़ विशेष से स्वंय को भरना तथा फिर नहाना मल-2 कर या छीटें पड़वा कर के हाथ धोने या समस्त कीचड़ विशेष को केवल दूर से ही नमस्कार करना अपना-2 कमाया हुआ दुर्लभ-2 सा शौंक मात्र ही है केवल निश्चित रूप से आप की दुर्लभ शौंक रूप उपलब्धि अवश्य मुबारक के योग्य है निश्चित रूप से । अपने पक्ष को सावधानी से प्रस्तुत करना चाहिये कि अगर आप मेरे सच्चे मित्र-समबन्धी अथवा हितैषी हैं तो मुझे इन्सान बनने के लिये मिली आवश्यक दुर्लभ रहत-मर्यादा में निश्चित रूप से दृढ़ बन कर वरतने रहने में आप मेरी अवश्य "दुर्लभ विशेष मदद" करें । केवल यही "दुर्लभ दान अथवा सगन" रूपी मदद मेरी गरीब नाम की तुच्छ सी झोली में केवल मुझे अमीर

बनाने के लिये डालें । आपका यह दुर्लभ मोतियों से लदा मदद रूपी दान विशेष अथवा एहसान मैं यकीनी तौर पर सारी उम्र अवश्य धूप-बत्ती दे कर के निश्चित रूप से याद रखूंगा ऐसा प्रण करता हूँ । "रहत-मर्यादा" के पक्के रहो प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । चतुराई से कार्य करो अथवा स्वंय को बचाओ । चतुराई का भाव छल-कपट में वरतना कदापी हर्गिज भी नहीं है निश्चित रूप से । चतुराई का भाव है अपनी "रहत मर्यादा" में दृढ़ता से वरतना "ढंग विशेष" से समझा करके निश्चित रूप से । घर से बाहर पांव रखने से पहले अपने सभी विघ्नों का बन्दोबस्त घर पर ही यथा सम्भव करके ही बाहर निकलो । यथा सम्भव अन्न-जल तक अपना ही केवल उपयोग में लाओ तथा इसका भी इन्तजाम करके ही केवल घर से निकलो निश्चित रूप से आवश्यकतानुसार।

"धूमधाम" से करने का अर्थ है केवल सज धज करके आत्मा के नाश का सामान एकत्र करने हेतू स्वंय को प्रस्तुत करना निश्चित रूप से । कुछ करना ही है तो हिन्दुस्तान गरीबी में केवल अमीर है निश्चित रूप से । आज हिन्दुस्तान गरीबी का घर विशेष है यकीनी तौर पर । बड़ी "धूमधाम" से इस गरीबी को दूर करने का प्रयन्न करो । आप "गरीब विशेष" को ही सदा के लिये दूर करने में लगे हो तथा ऐसा दुर्लभ कार्य विशेष को सम्पन्न करने का "आविष्कार विशेष" करके ही अपने को श्रेष्ठ बता रहे हो तथा

केवल इसी आविष्कार विशेष के बल पर ही निश्चित रूप से राजा के अधिकार विशेष पर अपना हक स्थापित कर बैठ गये हो इस दुर्लभ तख्त विशेष पर ! ऐसे समारोहों विशेष में सभी जीवों को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न हमें प्राण प्रण से अवश्य करना ही चाहिये मर्यादा अनुसार निश्चित रूप से । अतः जरूरत-मंदो तथा सम्बन्धियों-बुजुर्गों और आश्रितों को अन्न-वस्तु-पदार्थ इत्यादि से यथा संम्भव तथा उपलब्ध समर्था और साधन इत्यादि से अवश्य आवश्यकतानुसार संतुष्ट अथवा प्रसन्नचित करना ही कर्तव्य है तथा अपने इस कर्तव्य पालन से आप को भी विमुख नहीं होना चाहिये । तथा एक या अधिक समर्थानुसार विशेष-2 "शहीदी स्थानों" पर अवश्य आवश्यक रूप से श्रद्धानुसार नतमस्तक होना ही केवल आपके निज कल्याण हेतू कल्याणकारी है निश्चित रूप से । इस विशेष फेरे नाम के कार्य से निपट कर घर पर अपने शेष संसारिक व्यवहार वासना तथा स्वार्थ रहित ढंग विशेष से निपटायें । इस संसारिक व्यवहारों में "सूक्षम अदृश्य शैतानी ताकतों" की पूजा अथवा अराधना के लिये निश्चित रूप से कोई भी स्थान उपलब्ध ही नहीं है केवल आप जैसे सच्चे परमार्थी के निजी कल्याण हेतू । अपने इस निज कल्याण को आप सुपने में भी भूलने की कोशिश मत करियेगा निश्चित रूप से यदि अपना स्वंय का निश्चित भला चाहते हो तो यकीनी तौर पर आवश्यक

रूप से । पुरूष तथा स्त्रियों के समस्त व्यवहार अपने-2 दायरे में ही होने वांछनीय कल्याणकारी हैं निश्चित रूप से, समर्था अनुसार केवल गुरूबाणी विशेष का पाठ-कीर्तन स्वाध्याय ही कल्याणकारी है ऐसे समारोहों मे निश्चित रूप से । समर्था अनुसार रोज़ ज़रूरत मंदो के अन्न-पदार्थ आदि का भी इन्तजाम करना वांछनीय है । ये सभी बन्दोबस्त समर्था अनुसार स्वंय ही करने कल्याणकारी हैं यथा सम्भव । दूसरों पर कम से कम ही निर्भर रहना श्रेष्ठता है निश्चित रूप से । यदि अखण्ड पाठ रखते हो तो पाठ बोल कर करना चाहिये तथा सभी को यथा सम्भव प्रत्यक्ष उपस्थित हो कर पाठ सुनना तथा चिंतन करना ही कल्याणकारी है । तथा लिखित ग्रन्थ के अनुसार व्यवहारिक जीवन जीना ही केवल श्रेष्ठता है निश्चित रूप से । जो इस ग्रन्थ रूपी लिखित रहत-मर्यादा अनुसार व्यवहारिक जीवन जीना पसंद नहीं करते उन्हें दूसरे स्थानों पर अखण्ड पाठ रखवाने तथा झूठी अरदासों को करवाने से कुछ भी प्राप्त होना सुपने में भी केवल असम्भव ही है निश्चित रूप से । प्रभू दरबार में "किराये की भक्ति" के लिये कोई भी स्थान नहीं है निश्चित रूप से । ये निकृष्ट धन्धा केवल आप के समय तथा साधन विशेष की बरबादी अथवा दुरूपयोग है निश्चित रूप से । इस दुरूपयोग का निश्चित नतीजा है कि अगले जन्मों में अवश्य निश्चित रूप से आपको ये विशेष समर्थता रूपी साधन कभी सुपने

में भी उपलब्ध होना केवल असम्भव ही साबित होगा । "खून के आंसू" रोने के बावजूद आप की "चीख पुकार" कोई भी सुनने वाला उपलब्ध ही नहीं होगा निश्चित रूप से । इसलिये अपने को इस "निकृष्ट धन्धे" से दूर ही रखो निश्चित रूप से यदि अपना स्वंय का निजी कल्याण चाहते हो तो दूर से ही नमस्कार करो यकीनी तौर पर इस पेशे को । "अगे वस्त सिजाणिये पितरी चोर करेई ।" ये किराये की भक्ति रूपी धन्धा अथवा चोरी तेरी आगे पकड़ी जायेगी और तूं स्वंय को प्रभू को याद न करने के एवज में अवश्य चोर साबित हो ही जायेगा निश्चित रूप से प्रभू के दरबार में । जो इस दुर्लभ लिखित ग्रन्थ के अनुसार व्यवहारिक जीवन नही जीता तथा शब्द विशेष अथवा गुरू (केवल रागमई प्रकाशित आवाज) का ध्यान नहीं करता वह इस धंधे को करवा कर केवल घोर नरकों में ही अपना नाम दर्ज करवाता है निश्चित रूप से । "वडिये हथ दलाल के मुस्फी एह करे ।" मुस्फी यानी के सौदा अथवा व्यवहार । ऐसे धन्धों को करने वाले को प्रभू दरबार में "दलाल" कहा जाता है तथा शरीर के छोटे-2 टुकड़े काटने वाले घौर-2 नर्कों में लम्बे समय तक अवश्य रहना ही पड़ता है निश्चित रूप से "खून के आँसू" रोने तथा तड़पने-चिल्लाने के लिये अवश्य आवश्यकतानुसार यकीनी तौर पर । "नानक अगे सो मिले जि खटे

"घाले देई" यानी के आगे केवल आप के स्वंय का कमाया हुआ ही उपलब्ध होता है निश्चित रूप से यकीनी तौर पर ।

"उधार अथवा कर्ज" ले करके कुछ भी नहीं करना ही श्रेयस्कर है । "विशेष धर्म" में यदि कुछ लेना भी पड़े तो पहले वापसी का निश्चित रूप से अवश्य यकीनी तौर पर इन्तजाम आवश्यकता अनुसार करना ही केवल सच्चे परमार्थी के लिये विशेष रूप से "कल्याणकारी" है । "लेन-देन" केवल "आत्मिक मौत मरने" का स्वंय ही सामान बांधना मात्र है निश्चित रूप से । लिया हुआ देने आओगे तथा दिया हुआ लेने आना ही पड़ेगा निश्चित रूप से । कुछ भी हवा होने वाला नहीं है निश्चित रूप से गांठ बांध लो । तथा दोनो अवस्थाओं में आपको केवल इसी पिंजरे विशेष की अवश्य आवश्यक रूप से उपलब्धि होगी ही निश्चित रूप से । ये सभी व्यवहार केवल "मास्टर घसीटा राम" के "दुर्लभ फंदे" मात्र हैं ! अब सोचो कैसे इस "दुर्लभ पागलखाने" से स्वंय को मुक्त करवाने में समर्थ हो सकोगे ? विशेष धर्म में यदि कोई कुछ कन्या को देता है तो वह उपलब्धि केवल कन्या की "निजी धरोहर" के रूप में रखनी ही कल्याणकारी है निश्चित रूप से ।

"दान" केवल दानहीन हो कर के ही प्रस्तुत करना श्रेयस्कर है । यह क्रिया विशेष वासना अथवा कामना रहित होनी चाहिये तथा प्रचार से इस क्रिया विशेष अर्थात दान का दूर-2

तक कुछ भी सम्बन्ध होना ही नहीं चाहिये इसी में कल्याण है निश्चित रूप से । अपने ही दूसरे हाथ को भी ये खबर न मिले कि पहले हाथ ने क्या किया है निश्चित रूप से तभी ये क्रिया कल्याणकारी फल उपस्थित करती है । "दाता" केवल एक "परमात्मा" ही है निश्चित रूप से । दाता बन कर के दान करना केवल अपनी आत्मा के हनन का सामान एकत्र करना है निश्चित रूप से । "हउ विच दिया हउ विच लइआ ।" "हउ" के प्रतिफल से बचना सुपने में भी केवल असम्भव ही है निश्चित रूप से । अगर ऐसा न कर सको तो भूल करके भी "दान" नाम की "महामारी" में रूची मत रखो । "दान" एक भयानक दावानल ही है अगर इसका ठीक उपाय न हो तो कृप्या पूरी तौर से इससे अलग ही रहना चाहिये । अन्यथा जो इस से खेलता है उसका अपना स्वंय का निज घर सड़ने से बचा हो ! ऐसा जगत में विरला ही देखने में आता है । कोई भी क्रिया श्रेष्ठ या निम्न नहीं होती काम ही उसकी श्रेणी का निर्धारण करता है । विशेष स्थानों अथवा संसार के किसी भी कोने में अपनाई कोई भी क्रिया काम से ही जानी जाती है । जिन क्रियाओं को हम सेवा की संज्ञा का दर्जा देते हैं वह भी "काम" से जुड़ कर निम्न अथवा बन्धनकारी हो जाती हैं । अतः क्रिया (कर्म) कोई भी बन्धनकारी नहीं होती "काम" ही जीव को बन्धन में डालता है और यह काम कहीं भी

हो प्रतिफल निश्चित विधान है । इसीलिये कहा है कि काम ही बन्धन तथा निष्काम की मुक्ति है सारा जगत इसी बन्धन से ही बंधा ८४ लख जूनों में भ्रमण कर रहा है "सेवा करत होइ निहकामी तिस कउ होत परापत सुआमी ।" गीदड़ राजा ही बना बैठा था जब बहुत से गीदड़ों ने हू-हू की तो यह अपनी "स्वाभाविक वृति" को रोक न सका और हू-हू करके मृत्यु को प्राप्त हुआ यही हाल इस आत्मा का है यह भी इसी तरह से बन्धन (मौत) को प्राप्त होती है । जब बहुत सी कामी रूहों के बीच यह उनकी काम की हू-हू को सुनती है तो अपनी स्वाभाविक वृति जो आनंद चाहती है रोक नहीं पाती और यह भी काम रूपी हू-हू करके आत्मिक मौत को प्राप्त होती है । यह आनंद का अंश है और आनंद में ही लीन रहना चाहती है पर काम रूपी मद ने इस पर प्रतिफल क्रियाओं का बोझ इतना बड़ा दिया है कि आंनद के लिये तड़प रही है और इसलिये तुरन्त हू-हू कर के शिकारी (मास्टर घसीटा राम) के फंदे में फंस जाती है । चाहती यह आनंद ही है पर मिलता जहर (फंदा) है । इसीलिये इन कामी रूहों से उपरती (निसंग) रहने का मार्ग दर्शन किया जाता है ये रूहें कितने ही "महान स्थान विशेषों" अथवा क्रियाओं में संलग्न क्यों न हों । यह इन की संगत में हू-हू (काम रूपी) से बच सकती ही नहीं । सेवा रूपी क्रिया भी शरीर तथा मानसिक रूप से किया गया दान का ही अंग मात्र है

और इस का समाधान भी ऊपर लिखे फार्मूले से ही सम्भव है तथा इसी में इसका मार्ग दर्शन प्राप्त करें । गुरू-अंगद, गुरू-अमर दास इत्यादि विशेष रूहों की मिसाल इस फार्मूले के फल प्रत्यक्ष सिद्ध हैं । उस वक्त भी सेवकों की भीड़ रहती थी सिर्फ विरली इन्हीं रूहों ने ही केवल "ज्ञान" को क्यों प्राप्त किया ? कारण केवल यही इस हूं-हूं से बच सकीं शेष सब काम रूपी हूं-हूं के दावानल में भस्म हो गयीं अर्थात 84 के चक्र से मुक्त न हो सकीं । एक पाठी 24 घंटे का सेवक गुरू अर्जुन जी के समय का इसी का इसी "काम रूपी ईर्ष्या" के कारण "सूकर" की जून में गया । ऐसे अनन्त उदाहरण हैं सिर्फ मिसाल के तौर पर कहा गया है अब आप ही फैसला करें कि क्या आप में समर्थता है इस दान रूपी दावानल से बचने की अगर "शक" है तो कृप्या पूर्ण तौर से इससे अपने को बचा कर ही रखें इसी में आपका कल्याण है । अगर शौंक ही दान का है तो कृप्या अन्तर में आईये और अपनी प्राण शक्ति रूपी वस्तु का जितना दान आप दे सकते हैं उस "एक" को ही समर्पण कर दें इस में कोई भी "जोखिम" नहीं है । तभी आप का घर जलने से बचेगा । और यह सब कुछ केवल आप पर ही निर्भर करता है । आप स्वंय ही अपने मित्र अथवा शत्रु जैसा आप का शौंक हो बन सकते हैं । "पुन दान जो बीजदे सभ धरम राय कै जाई ।"

"राजा नृग" का दान इतिहास प्रसिद्ध है । धरती के कण गिने जा सकते हैं बरसात की बूंदे गिनी जा सकती हैं पर "राजा नृग" का दान गणना में नहीं आ सकता । एक भूल सिर्फ एक और वो भी उसकी जानकारी से रहित अनजाने में बन गई । एक गाय केवल एक अन्जाने में दुबारा से दान में संकल्पित कर दी गई प्रबन्धकों की गल्ती से । नतीजा "गिरगिट" की जून में गिरना पड़ा और इस जून से कल्याण "भगवान श्री कृष्ण जी" ने अपने हाथों से इसे गहरे कुंऐ में से निकाल कर के (द्वापर युग में) किया दूसरी तरफ "अनंत दान" मौजूद था ! अब आप बेशक इस "दावानल" में प्रवेश कर सकते हैं केवल इन पक्तियों को ध्यान में रखना ही आवश्यक है। ख्जब राजा नृग को अपनी भूल का पता चला तो उस भूल विशेष से बचने के लिये उसने गाय के स्वामी को "अपना सर्वस्व" देने की भरपूर नाकाम कोशिश अवश्य की थी । लेकिन ब्राह्मण ने "राजा का (कुछ भी) दान" लेना किसी भी सूरत में स्वीकार ही नहीं किया कारण अपने "ब्राह्मत्व" को नाश से बचाने के लिये । सच्चा ब्राह्मण कभी भी किसी से कुछ भी स्वीकार ही नहीं करता (केवल विशेष परिस्थिति को छोड़ कर (वह भी जीव कल्याण के वास्ते।) फिर "राजा का दान" तो दूषण से रहित लगभग असम्भव ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में !

"मृत्यु" सब से मुश्किल की घड़ी जीव की मौत ही है निश्चित रूप से । साधारण अथवा रहत मर्यादा से रहित जीव की मृत्यु बहुत भयानक अर्थात दर्द-भरी तड़पाने वाली होती है निश्चित रूप से । इस मुश्किल की घड़ी में कोई भी इसका मददगार नहीं होता यकीनी तौर पर । आत्मा का मोह शरीर से इतना अधिक हो जाता है कि कितना भी अभाव हो जाये शरीर में पर ये आत्मा किसी भी कीमत पर इस शरीर से अलग होना पसन्द ही नहीं करती तब फिर इसे बालों से पकड़ कर घसीटा जाता है तथा बहुत मार खानी पड़ती है निश्चित रूप से । उस वक्त यह सूक्ष्म शरीर में होती है । इतनी मार खाने पर भी यह आत्मा शरीर को छोड़ना पसन्द ही नही करती । फिर जो हाल इसका किया जाता है उस चीख-पुकार को लफजों में व्यक्त किया नहीं जा सकता निश्चित रूप से । यदि एक हजार-बिच्छू इकट्ठे डंक मारें तो जो भयानक दर्द उपलब्ध होगा उससे भी लाख गुना अधिक घोर तड़पा देने वाला भयानक दर्द साधारण भोगी आत्मा को उस मुश्किल की घड़ी अर्थात मृत्यु के समय बर्दाश्त करने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ता है निश्चित रूप से आवश्यकतानुसार ! ज़िन्दगी भर की रहत-मर्यादा रूपी व्यवहारिक जीवन केवल इसी मुश्किल की घड़ी से स्वंय को बचाने के लिये ही होता है निश्चित रूप से । रोज के व्यवहारिक अभ्यास से आत्मा को अपने स्वंय के शरीर के प्रति

होने वाले मोह रूपी-बन्धन को धीरे-2 अवश्य काट लेने में समर्था प्राप्त हो ही जाती है यकीनी तौर पर निश्चित रूप से । इस व्यवहारिक अभ्यास के अभाव में कोई भी यन्त्र आप को बचाने में केवल असमर्थ ही साबित होगा । कोई भी शक्ल विशेष कुछ भी नहीं कर सकती आपके स्वंय के मोह के सामने । कुछ भी हवा नहीं होने वाला निश्चित रूप से गांठ बांध लो । अगर कुछ होगा तो केवल तेरे स्वंय के प्रयन्न तथा प्रभू की "विशेष दुर्लभ दया" से प्रत्यक्ष होगा निश्चित रूप से । पर इस "फालतू सी चीज" के लिये तेरे पास कीमती समय ही कहाँ है निश्चित रूप से । निश्चित रूप से तू केवल "खून के आंसू" रोने की तैयारी में ही केवल व्यस्त है यकीनी तौर पर । ये प्रमाद तुझे अवश्य बहुत मंहगा साबित होगा ।

अन्त काल अर्थात मनुष्य के जन्म में "लक्ष्मी सिमरे" यानी के धन पदार्थों को एकत्र करने का मोह है तो "ऐसी चिन्ता में जे मरै" अर्थात ज़िन्दगी भर ऐसे व्यस्त रहने की दुर्लभ महान उपलब्धि "सर्प जून वल वल उतरै" निश्चित रूप से सर्प नाम की जून अथवा पिंजरे को लम्बे समय तक के लिये अवश्य रोशन करने के वास्ते मजबूर होना पड़ेगा यकीनी तौर पर । ऐसा ही हाल "स्त्री सिमरै" का है निश्चित रूप से "वेश्वा जून वल वल उतरे" वेश्या की जून भुगतनी पड़ेगी काम में डूबने का निश्चित इलाज

प्रभू के दरबार से । फिर "अन्त काल" यानी के मनुष्य के जन्म में "लरके सिमरे" "ऐसी चिन्ता में जेह मरे" पुत्र इत्यादि समबन्धों का मोह तुझे "सूकर जून वल वल उतरे" अवश्य सूअर नाम के श्रेष्ठ पिंजरे अथवा जून विशेष को रोशन करने के लिये केवल तुझे स्वंय को अवश्य मजबूर होना ही पड़ेगा आवश्यक रूप से । अब फिर खाने को गंद तथा रहने को केवल कीचड़ तुझे अवश्य उपलब्ध करवा ही दिया जायेगा निश्चित रूप से । मुबारक हो ! तुझे तेरी ये महान "दुर्लभ उपलब्धि ।" जब जीव की मांग ही यही है तो फिर इसका इलाज क्या हो सकता है बिना इसकी मांग दुर्लभ को प्रत्यक्ष किये और कुछ भी उपाय ही नहीं है निश्चित रूप से । "अन्तकाल" यानी के मनुष्य के जन्म में "मंदर सिमरै" यानी के यदि जीव महल-माड़ियों का शौंक विशेष अथवा मोह रखता है तो निश्चित इलाज "ऐसी चिन्ता मेह जेह मरै" यानी के मरने के बाद "प्रेत जून वल वल उतरै" अर्थात केवल प्रेत नाम की "दुर्लभ जून अथवा पिंजरा" निश्चित रूप से उपलब्ध करवा ही दिया जाता है । युगों-युग तक फिर इस अपने "दुर्लभ आविष्कार" खुद को व्यस्त रखने का ज़िन्दगी भर का विशेष उपलब्ध नतीजे को निश्चित रूप से केवल तुझे ही आवश्यक रूप से भोगना ही पड़ेगा यकीनी तौर पर गाठ बांध लें ! आखिरी मुश्किल की घड़ी ऐसी है जैसे नुकीले कांटो की झाड़ी पर कोई बारीक मलमल का कपड़ा

फंसा हो तथा उसे एक कोने से पकड़ कर एक झटके से खींच कर नुकिली झाड़ी से अलग किया जाये तो जो हाल उस कपड़े का होगा वैसा ही केवल कई गुना बढ़ कर भयानक दुख अथवा दर्द आत्मा को भुगतना निश्चित है यकीनी तौर पर । फिर दुखी आत्मा पलट कर आपको कुछ भी बताने में केवल असमर्थ ही है निश्चित रूप से । वो आत्मा आपको देख तो सकती हैं रोते पीटते पर कर कुछ नहीं सकती और आप उसे रोते हुए "खून के आंसू" देख भी नहीं सकते फिर मदद ही क्या करोगे निश्चित रूप से । फिर छुड़ाया वही जाता है "तिन अन्त छडाये जिन हर प्रीत चितासा" यानी के ज़िन्दगी भर केवल एक "अकाल पुरख परमात्मा" का ही निश्चित रूप से शौंक अथवा मोह रखने वाला बचता है यकीनी तौर पर । ऐसा कहीं नहीं लिखा गया है कि आप शक्लों अथवा मुर्दो विशेष का ध्यान या शौंक रखो तथा उन से मोहरें लगवाओ और आप बचा लिये जाओगे । निश्चित रूप से आप को "बहुत बड़ा" लेकिन "मीठा सा धोखा" अवश्य हो ही चुका है केवल प्रत्यक्ष होना बाकी है वो भी प्रत्यक्ष होने की घड़ी निरन्तर घिसट-2 कर नजदीक आती ही जा रही है बिना रुके यकीनी तौर पर । फिर केवल आप को सिर पीटना ही याद आयेगा निश्चित रूप से पर कर कुछ नहीं सकोगे उस मुश्किल की घड़ी में ।

मुर्दा मिट्टी के सिवाय और कुछ भी नहीं है निश्चित रूप से "कूड़-कलर तन भस्मे ढेरी बिन नावै कैसी पत तेरी" यानी के शरीर कूड़ा अर्थात बिसटा का पात्र या ढेर है । कलर अर्थात चूने की दीवार की तरह से निरन्तर भुरता रहता है शरीर । भस्मे ढेरी अर्थात केवल राख की ढेर है निश्चित रूप से । ज़िन्दगी भर इसे संवारता रहा-सजाता रहा पर आखिर ये भी साथ छोड़ ही गया "जो तन उपजया संग ही सो भी संग न होइआ ।" इस दुर्गन्ध से भरे बर्तन का मोह तुझे "बहुत भयानक दुख" सहने के लिये अवश्य मजबूर कर ही देगा निश्चित रूप से यकीनी तौर पर आवश्यक रूप से । हे आत्मा "बिन नावै" बिना नाम (केवल प्रकाश) अथवा प्रभू के शौंक के "कैसी-पत" यानी के मान-तेरी अर्थात तुझे प्राप्त हो सकता है । यानी के केवल प्रभू का शौंक ही तुझे बचाने में केवल समर्थ है निश्चित रूप से । "जन नानक अनदिन नाम जपै हर सतै इह छूटण का साचा भरवासा" अर्थात दिन रात निरन्तर केवल उस "अकाल पुरख परमात्मा" का ही ध्यान रख अथवा चिंतन कर तथा मदद के लिये केवल उसे ही पुकार । प्रत्येक काल में केवल वही प्रभू समर्थ तथा प्रत्यक्ष है निरन्तर तेरी सुरक्षा अथवा मदद को उपलब्ध है निश्चित रूप से । इस सजी हुई मिट्टी विशेष को दफना देगा तो कीड़े खायेंगे और गंद बनेगा यदि बहा देगा तो वहां भी जानवर खायेंगे और गंद ही

बनेगा तथा अग्नि में जलायेगा तो केवल राख ही बचेगी जिसे किसी भी बहते पानी में बहा देना ही वांछनीय हैं निश्चित रूप से । विशेष-2 जलाश्यों जैसे गंगा-कीरतपुर-हरिद्वार या ब्यास इत्यादि स्थानों पर बहाने से उत्तम गति की प्राप्ति है ऐसा केवल आप को ठगने के लिये विशेष-2 ठगों द्वारा किया गया निश्चित रूप से झूठा प्रचार मात्र है यकीनी तौर पर । मुर्दे को शीघ्र ही विखंडित कर देना चाहिये किसी भी उपलब्ध साधन से जैसे अग्नि अथवा बिजली इत्यादि द्वारा । तथा शेष राख को बिना विचारे बहते जल में प्रवाहित कर देना ही वांछनीय है मनुष्य जाति के कल्याण हेतू । मुर्दे को देर तक रखने से बहुत शीघ्र ही आत्मा के अलग होते ही शरीर से असंख्य सूक्ष्म कीड़े शरीर में इकट्ठे होने लगते हैं तथा उस शरीर को हजम करने लगते हैं तथा जो द्रव्य अथवा गंद इन सूक्ष्म कीड़ों से प्रत्यक्ष होता है केवल एक भयानक विष है निश्चित रूप से इस विष के कारण बहुत दुर्गंध उपलब्ध होने लगती है । जो मानव जाति के लिये कल्याणकारी कभी भी सुपने में भी नहीं हो सकती । इसीलिये मुर्दे को बिना किसी का इन्तजार किये तुरन्त अग्नि सुपुर्द कर देना ही केवल वांछनीय है निश्चित रूप से यकीनी तौर पर । इनका क्या इलाज है कि दावा तो विकास का पर मुर्दे को सजा कर रखते हैं कि फिर से इसे ज़िन्दा कर दिया जायेगा कयामत के रोज ? जिन्दा मनुष्य को तो रहने के लिये

स्थान उपलब्ध होता नहीं यहां सभी मुर्दो को ढाई गज जमीन चाहिये निश्चित रूप से । ऐसे विशेष-2 "मुर्दो के सौदागरों" से सावधान रहना ही श्रेयस्कर है निश्चित रूप से । ज्यादातर प्रेत जूनों में गिरी अथवा फंसी हुई आत्मायें इन्हीं कब्रों में ही धक्के खाती फिरती हैं और आप इन कब्रों को रोशन अथवा पूज कर केवल अपना अगला जन्म इन कब्रों में प्रेत की जून का ही निर्धारित कर रहे हो निश्चित रूप से केवल अपने स्वयं के ही हाथों लिख कर के । "भ्रम भूले अज्ञान अंधले भ्रम-भ्रम फूल तौरावे। निरजीउ (शक्लें विशेष) पूजह मड़ह (कब्र) सरेवह-सभ बिरथी घाल (मेहनत) गवावे ।" अपने को वैज्ञानिक घोषित करने वाली बहुत बड़ी मनुष्य जाति केवल अज्ञानता के अंधकार में ही पूरी तरह से डूबी हुई है निश्चित रूप से । फूल तो चेतन था जब तक डाल से जुड़ा हुआ था आप ने फूल को डाल से अलग करके अथवा तोड़ कर के मृत होने के लिये मजबूर कर ही दिया और फिर पेश किस के आगे कर रहे हो ? केवल जड़ पदार्थ अर्थात कब्र विशेष पर यानी के सिर्फ मृतक पर । फिर ढोल पीट रहे हो अपनी श्रेष्ठता अथवा बुद्धिमानी का । "शरीर" की पूजा-बेशक गद्दीधारी विशेषो की सही केवल मुर्दो की ही पूजा है निश्चित रूप से (निरजीउ पूजह) । तथा मड़ा सरेवह अर्थात कब्रों को पूजना-मन्नतें मांगनी केवल अपने दुर्लभ मनुष्य के जन्म को "सभ बिरथी

घाल गवावै" व्यर्थ खोना अथवा गंवाना मात्र है ऐसी "निकृष्ट मेहनत" करके निश्चित रूप से । केवल आत्मा का स्वंय को ऊंचे तथा दुर्लभ "मनुष्य के जन्म" से गिरा कर खुद को प्रेत की जून में जन्म लेने के लिये निश्चित करना है युगों-युग तक के लिये केवल घोर भयानक दुख सहने के लिये स्वंय को मजबूर करना है निश्चित रूप से । मृत्यु के समय केवल बाणी का पाठ करना चाहिये बेशक टेप इत्यादि लगायी जा सकती हैं । रोने-पीटने का धन्धा केवल आत्मा को बांधता है तथा उसी की अगली गति में बाधा ही उत्पन्न होती है निश्चित रूप से । इसलिये समस्त रोने पीटने वाले धन्धे विशेष से स्वंय को उपराम रखना ही केवल श्रेयस्कर है निश्चित रूप से । रोने पीटने के बजाये संस्कार के बाद पाठ रखना या करना ही बुद्धिमानी है निश्चित रूप से केवल मर्यादानुसार यकीनी तौर पर । तथा यथा संम्भव समर्था अनुसार अन्न-जल तथा पदार्थों विशेष आदि का जरूरतमंदों में ही बांटना ही श्रेष्ठ कल्याणकारी है केवल आप स्वंय के लिये निश्चित रूप से । तीसरे दिन भी भोग के उपरान्त कथा-कीर्तन तथा लंगर आदि का जरूरत मंदो सहित बंटवारा ही वांछनीय है । क्रिया इत्यादि सभाओं में चाय-खाने इत्यादि का धन्धा केवल बुद्धिहीनता का ही परिचय है निश्चित रूप से । सभी क्रिया में वाणी से सम्बन्धित स्वाध्याय ही केवल आत्मा के लिये कल्याणकारी है दुख से बचने

तथा शांत रखने के लिये । रोने पीटने से तो प्रेत आत्मा (बीत गये) के कष्ट में केवल बढ़ोतरी ही होती है । इसीलिये कहा है कि "जीवित मरिये भवजल तरिऐ ।" मरने के बाद तो साधारण आत्मा अर्थात प्रभू से विमुख रूह के लिये तो केवल "मास्टर घसीटा राम जी" का ही लेखा अथवा फंदा विशेष है निश्चित रूप से । आप के समस्त उपाय अथवा "दुर्लभ-2 कारस्तानियों विशेष" का प्रेत आत्मा के लिये सुपने में भी कुछ अर्थ ही नहीं रहता निश्चित रूप से गांठ बांध ले । तेरे को दी गयी समस्त "रहत मर्यादा" अनुसार जीने वाला व्यवहारिक जीवन केवल मरने के बाद पेश आने वाली मुश्किलों को आसान अथवा कम करने के लिये ही है तेरे स्वंय के निज कल्याण हेतू केवल निश्चित रूप से । जीते जी जीव मानता नहीं और मरने के बाद इसकी स्वंय की उत्पन्न की गई मुश्किलों का कुछ भी इलाज सम्भव ही नहीं है निश्चित रूप से केवल दुख ही दुख और बड़ा घोर दुख केवल यही निश्चित इलाज है यकीनी तौर पर । प्रेत आत्मा के नाम पर किये जाने वाले समस्त कार्य केवल व्यर्थ अथवा फोकट का धन्धा मात्र हैं निश्चित रूप से जैसे "पितृ भोज" इत्यादि। "जीवित पितृ न मानै कोऊ मुंए सिराध कराही" अर्थात अभी तूं जीवित है और रहत मर्यादा अनुसार जीवन जीना तुझे पसन्द नहीं है । फिर कल को जब तूं मर कर के पितरों अर्थात बीत गयों की श्रेणी में शामिल हो

जायेगा तब ये तेरे पीछे सम्बन्धी जन "दलाल विशेष-2" तथा कौओं-कुत्तों की बारात को इकट्ठा कर के इनके आगे चारा विशेष धरेंगे और इन्हें चर कर ये कौओे-कुत्ते तेरे नाम की अरदास करेंगे अथवा मन्त्र पढ़ कर तुझे समस्त नर्कों तथा निकृष्ट योनियों से जादू-मन्तर से मुक्त करवा देंगे या "गुरू नानक" नाम के "दुर्लभ प्लेनेट" रूपी चरणों विशेष में तुझे एक बहुत बड़ा सा प्लाट उपलब्ध हो जायेगा ! ऐसे "निकृष्ट कार्यो" का कल्पना में भी कुछ अर्थ ही नहीं है निश्चित रूप से । इन "निकृष्ट धन्धों" को कर के तू केवल अपनी मौत का भयानक तड़पाने वाला सामान ही केवल इकट्ठा कर रहा है निश्चित रूप से गांठ बांध ले । "वडिअह हथ दलाल के मुस्फी एह करेइ ।" केवल घोर नरकों को रोशन करने की ही तैयारी में तूं व्यस्त है इन दुर्लभ निकृष्ट कार्यो को सम्पन्न करके निश्चित रूप से । "नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देई" अर्थात जो तुझे इस सच को बता रहा है ताकी तू अपने को इन निकृष्ट कार्यो से दूर रख कर उपलब्ध होने वाले दुखों से बच जाये । तू इन निकृष्ट कार्यो विशेषों को छोड़ना तो दूर रहा बताने वाले नानक के नाम पर ही दसवीं का श्राद्ध मना कर अपने लिये केवल घोर-2 नर्क ही पक्के कर रहा है निश्चित रूप से । "पितर भी बपुरे कह किउ पावह कऊहा कूकर खाही ।" अर्थात इन धन्धों में एकत्र होने वाले बाराती केवल अपने लिये घोर-2 नर्क तथा

निकृष्ट भोगी जूनें कौओं -कुत्तों इत्यादि की भोगने की पक्की कर रहे हैं निश्चित रूप से केवल अपने ही हाथों अपना गला दबा रहे हैं यकीनी तौर पर ।

"सच्चे परमार्थी" को इन सभी निकृष्ट वासनाओं से उपराम रहना ही केवल श्रेयस्कर है निश्चित रूप से । सभी विशेष प्राणियों को अपनी वसीयत पहले से ही निश्चित करके लिखित रख देनी चाहिये जीते जी निश्चित रूप से ताकि बाद मे मरने के पश्चात किसी तरह की बाधा न उत्पन्न होने पाये । इस में पूरी तरह से विशेष सावधानी बरतनी चाहिये ज़िन्दगी का तो कोई भरोसा ही नहीं है कब मास्टर घसीटा राम जी अपना कार्य कर जायेंगे आप सोच भी न सकोगे । फिर बाद में आप के आश्रितों को बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है निश्चित रूप से कोर्टों में धक्के खाने पड़ते हैं बिना मतलब अपनी कीमती ज़िन्दगी इन व्यर्थ के धन्धों पर खर्च करने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ता है निश्चित रूप से । लिखित होने के बावजूद कन्याओं अथवा बहनों इत्यादि सम्बन्धी आश्रितों तथा कोई भी जरूरत मंदों विशेष तौर पर अपंग अथवा विधवाओं का अवश्य आवश्यक रूप से जरूरत अनुसार ख्याल रखना अथवा मदद करनी ही केवल तेरे स्वंय के लिये अवश्य निश्चित रूप से लाभकारी या कल्याणकारी है तेरी अपनी ही आत्मा के उत्थान के हेतू यकीनी

तौर पर । जो आत्मा निकृष्ट वासनाओं के कारण प्रेत नाम की निकृष्ट भोगी जूनों में गिर जाती हैं मरने के पश्चात । बिना भुगतान विशेष हुए इन आत्माओं का छुटकारा असम्भव जैसा ही है निश्चित रूप से । बदले की प्रबल वासना के ही कारण केवल ये प्रेत आत्मायें दूसरे संबंधित विशेष मनुष्यों को ही केवल बाधा उत्पन्न करती हैं निश्चित रूप से । क्योंकि इन प्रेत आत्माओं का संबंधित विशेष मनुष्य से पुराना हिसाब बाकि बचा हुआ होता है । बिना उस भुगतान के आप का छुटकारा उस विशेष प्रेत आत्मा से केवल असम्भव लफज को ही सार्थक बनाना है निश्चित रूप से आप करोड़ यत्न कर लो सब केवल ठगी का ही धन्धा है निश्चित रूप से । जितनी मर्जी चौंकिया विशेष-2 दिलवाते फिरो-डेरों-स्थानों विशेष के चक्कर काटते रहो केवल धक्के खाने के और कुछ भी उपलब्ध होना केवल असम्भव ही है निश्चित रूप से । एक ही उपाय है प्रेत आत्मा का बाकि बचा हुआ हिसाब चुका दो । यदि आप में उस प्रेत आत्मा का शेष हिसाब चुकाने की समर्था है तो आप को अवश्य फिर प्रेत आत्मा से छुटकारा मिल ही जायेगा निश्चित रूप से । इस के अभाव में केवल रोना ही पड़ेगा यहां तक कि आप का दुर्लभ मनुष्य का जन्म भी अवश्य भेंट चढ़ ही जायेगा निश्चित रूप से । कोई "ताकत विशेष" हर जर्रे पर नजर रखती है भरपूर निरन्तर निश्चित रूप से। कोई सुपने में भी बिना उस "ताकत

विशेष की रजा" के किसी दूसरे को विघ्न पहुंचाना तो दूर रहा हिल सकने में भी केवल असमर्थ ही साबित होगा निश्चित रूप से । "जरा-मरा-ताप-सिरत-शाप सभ हर के वस है । कोई लाग न सके बिन हर का लाइया ।" अर्थात बुढ़ापा-मृत्यु-रोग-प्रेत बाधा-श्राप या वरदान इत्यादि सभी तरह की क्रियाऐं विशेष-2 केवल "एक अकाल पुरख परमात्मा" की रजा से ही प्रत्यक्ष होनी सम्भव है निश्चित रूप से गांठ बांध लो । उसकी "दुर्लभ रजा विशेष" के अभाव में केवल प्रत्यक्ष होना तो एक तरफ रहा आप का सुपने में भी हिलने का विचार सिर्फ असम्भव लफज को ही सार्थक बनाना है निश्चित रूप से ।

केवल स्त्री ही यदि स्वंय को "रहत मर्यादा" अनुसार व्यवहारिक बना ले तो एक "ऋषि" का जन्म लेना अवश्य निश्चित हो ही जाता है यकीनी तौर पर । और यदि केवल एक स्त्री ही रहत मर्यादा से रहित हो जाये तो फिर आप को कहीं नर्क ढूंढने की कोई आवश्यकता ही नहीं है निश्चित रूप से स्त्री स्वंय ही "गर्भ घोर" नाम का नर्क अपने साथ-2 ही लिये फिरती हैं यकीनी तौर पर । फिर बहुत सारे नर्क मिल कर के कैसे आप के सुपने को साकार होने देंगे इस दुर्लभ प्लेनेट को स्वर्ग बनाने का ? अब ऐसे "बुद्धिहीन दुर्लभ-2 विद्वानों" का क्या इलाज है जो इस शमशान भूमि अर्थात धरती पर स्वर्ग नाम की निकृष्ट अधूरी कल्पना को

झूठा साकार करने का नकली दावा पेश करते फिरते हैं ? इस श्मशान भूमि रूपी स्वर्ग में रहने वाले श्रेष्ठ मुर्दे अथवा शक्ल विशेष को ही परमात्मा स्थापित करने में ही अपने को श्रेष्ठ बता रहे हैं ! बहुत से भोले होते हैं बेचारे सपनों की दुनिया में रहने वाले ! बेचारे ये भी नहीं जानते कि "कोई विशेष" निरन्तर उन्हें हजम करता जा रहा है ये मीठा सा सुपना दिखा कर के निश्चित रूप से । परमार्थी स्त्री जगत को कुछ खास बातें निरन्तर ध्यान में रखनी ही श्रेयस्कर हैं निश्चित रूप से । एक से चार घंटे केवल शुद्ध हृदय से "अकाल पुरख परमात्मा" का निरन्तर चिन्तन अथवा ध्यान बैठकर के तथा शेष समस्त कार्यों में केवल उसी एक प्रभू का ध्यान करना । "सास गिरास न विसरै-सफल मूरत गुर (केवल रागमई प्रकाशित आवाज अर्थात परम चेतन सत्ता) आप ।" स्वंय को संयम में रखना मानसिक तथा इंद्रियों सहित अर्थात सभी प्रकार की अनावश्यक वासनाओं अथवा कामनाओं से रहित व्यवहारिक जीवन जीना निश्चित रूप से । तथा हिंसा अथवा गुस्से का "यथा सम्भव" पूर्णतया त्याग । श्रद्धा तथा निस्वार्थ आश्रितों की पालना समर्थानुसार निश्चित रूप से । गहना -कपड़ा-राग-रंग तथा अंग इत्यादि केवल पति प्रसन्नता तक ही सीमित है निश्चित रूप से लोक दिखावे का तो कोई प्रश्न ही नहीं है सुपने में भी । सीमा से बाहर तो यह भी केवल नाशकारी विष ही साबित होगा

निश्चित रूप से । पति अनुपस्थिति में तो इसकी कल्पना भी सम्भव ही नहीं है निश्चित रूप से । पूर्णतया पति की रजा में ही वरतना श्रेयस्कर है श्रेष्ठ गृहणी के लिये निश्चित रूप से यही श्रृंगार गृहस्थी के विकास का दुर्लभ साधन है। पहनावा विशेष रूप से केवल शरीर को ढकने अथवा छुपाने का साधन होना ही श्रेयस्कर है केवल स्त्री जाति के स्वंय के कल्याण हेतू निश्चित रूप से । नंगा होना बहुत आसान है पर फिर से वस्त्र पहनना केवल असम्भव जैसा ही है निश्चित रूप से । सोच ले हे चालाक स्त्री ! दृढ़ निश्चय से उपलब्ध रहत-मर्यादा में ही स्वंय को स्थिर रखना सभी को संतुष्ट रखते हुऐ अर्थात अपने कर्तव्य से कभी भी विमुख न होना निश्चित रूप से । "धंधा धावत दिन गइआ रैण गवाई सोई । कूड़ बोल बिख खाइआ-मनमुख चलिआ रोई ।" अर्थात केवल संसारिक धन्धों में ही व्यस्त हो कर के अपने कीमती दुर्लभ मानव जन्म के "मकसद विशेष" को नहीं भुला देना चाहिये । यानी के केवल संसार के ही बन कर के मत रहो अपना "निजी होम वर्क" भी अवश्य पूरा करने में दृढ़ निश्चय से वरतो । अर्थात प्रभू की रजा में केवल उसी "एक" पर अपनी "दुर्लभ हस्ती" को "कुर्बान" करो निश्चित रूप से ।

जन्म दिन के नाम पर किये जाने वाले आपके समस्त धन्धे ताली-पीटने नाचने-कूदने वाले निश्चित रूप से आप को

अपने ही हाथों अपने ही पैरों में "घुंघरू" बांधने के लिये अवश्य विवश कर ही देंगे निश्चित रूप से । "चेतना है तउ चेत लै निस दिन मै प्रानी। छिन छिन अउध बिहात है फूटै घट जिउ पानी ।" चेतना अर्थात आत्मा-हे आत्मा ये "दुर्लभ मनुष्य का जन्म" तुझे जागने के लिये उपलब्ध हुआ है निश्चित रूप से यानी के कैसे चेत अथवा जागेगा प्राणी ? केवल अपने "मूल दुर्लभ" अर्थात "अकाल पुरख परमात्मा" में समा कर के निश्चित रूप से जीते जी । कैसे समायेगा ? जीते जी केवल अपने निज के शरीर में ही इस "दुर्लभ परम चेतन सत्ता" को प्रत्यक्ष अनुभव करके निश्चित रूप से । अब तू जागने के बजाये सोना पसन्द करता है कैसे ? "छिन-छिन" यानी के पल पल । "अउध" यानी के उम्र । "बिहात है" यानी के निरन्तर बीतती जा रही है अथवा कम या घटती जा रही है आयु । "फूटै घट जिउ पानी" अर्थात जैसे घड़ा सिमता हो तो उसमें भरा हुआ पानी धीरे-2 लगातार निकलता हुआ खत्म हो जाता है या बह ही जाता है निश्चित रूप से वैसे ही ऐ "दुर्लभ प्राणी" तेरी आयु तो निरन्तर शैतान हजम करता ही चला जा रहा है निरन्तर और तू खुशी मनाने नाचने-कूदने में लगा हुआ है ! "झूठे लालच लाग के नाह मरन पछाना" अर्थात झूठे अथवा अधूरे विशेष-2 पदार्थों को एकत्र करने का लोभ तुझे सोने के लिये मजबूर कर ही दे रहा है यानी के तूं "सूक्षम अदृश्य शैतानी ताकतों" को भूला

बैठा है जो तेरे सिर पर भूत की तरह से सवार हो कर के निरन्तर उल्टी गिनती गिन रही हैं केवल तुझे पूरी तरह से हज्म कर लेने के वास्ते निरन्तर निश्चित रूप से । "हर गुन काह न गावही मूरख अगिआना" यानी के अज्ञानता क्या है कि प्राणी का शैतान अथवा मौत को भुला देना । ऐसी मूर्खता का नतीजा घोर-2 पार्कों की सैर है निश्चित रूप से यानी के तू उस "अकाल पुरख परमात्मा" को भुलाने का दोष भूले से भी मत कमा यदि दुखों से बचना चाहता है निश्चित रूप से । अब विचार कर प्रभू संदेश क्या है और तेरे समस्त निकृष्ट ताली-पीटने नाचने कूदने वाले धन्धे क्या साबित करते हैं ? कुछ करने का ही शौंक है तो "वाणी अनुसार स्वाध्याय" करो जरूरत मदों का ख्याल रखते हुए तथा इस विशेष दिन "शोक सभा" मनाओ कि ज़िन्दगी भर का होमवर्क परमात्मा से मिलने का जो अभी शुरू भी नहीं किया और आयु शैतान नें तीन सौ पैंसठ दिन और हज्म कर ली अथवा कम हो गई । शेष आयु का क्या भरोसा अथवा यकीन करें ये भी निश्चित नहीं है कि अन्दर गया हुआ प्राण बाहर आयेगा भी या "नहीं" अथवा अगला प्राण ले भी सकेंगे कि नहीं या शायद अगले पल मौत ही निश्चित हो जो मुँह फाड़े हमें सदा के वास्ते हज्म करने के लिये ही केवल निरन्तर ताक में है ! हे दुर्लभ प्राणी तू क्यों इस मौत की सच्चाई से आँखे फेरे बैठा है । ये प्रमाद तुझे बहुत महंगा साबित होगा ।

क्यों तू स्वंय को "खून के आंसू" रूलाने के वास्ते ही केवल दुर्लभ-2 कार्यो में स्वंय को अत्यन्त व्यस्त रखे हुऐ है । अभी भी समय है जाग ले प्राणी इससे पहले कि शैतान अपना कार्य सिद्ध करे निश्चित रूप से तू अपना निजी कार्य केवल अपने निज के कल्याण हेतू अवश्य पूरा कर ही ले यकीनी तौर पर केवल जीते जी !

"जो मुर्दो का शोक मनाते हैं वह सदा के लिये मृत सम्बन्धियों के "शोक सागर" में ही डूब जाते हैं निश्चित रूप से ।" और जो जीते जी अपनी "शोक सभा" सम्पन्न कर लेते अथवा मना लेते हैं निश्चित रूप से उन्हें फिर से दुबारा शोक करने के वास्ते इस भयानक भवसागर में गोता लगाने के लिये प्रत्यक्ष उपलब्ध होना ही नहीं पड़ता । शेष और सभी प्रकार के कार्यो विशेष में भी केवल संयम से वरतें तथा "रहत मर्यादा" अनुसार "व्यवहारिक जीवन" जीते हुए अपनी सभी जिम्मेदारियों का भुगतान पूर्ण ईमानदारी के साथ करें (केवल "गुजारे मात्र की प्रविष्टी" को प्रत्येक काल में मध्य नजर रखते हुऐ) केवल "अकाल पुरख परमात्मा" को मिलने के "विशेष मकसद" को निरन्तर ध्यान में रखते हुऐ ही अपनी "दुर्लभ हस्ती मानुख के जन्म" को खर्च करें खूब सोच विचार कर तथा केवल अपने स्वंय

के निजी कल्याण के हेतू ही निरन्तर स्वंय के स्वाध्याय में ही सलंग्न रहें जीवन भर निश्चित रूप से यकीनी तौर पर !

सभी प्रकार के कार्य विशेषों में लंगर इत्यादि का प्रबन्ध बुलाई गई सभाओं से पृथक ही होना वांछनीय आत्मा के लिये कल्याणकारी है । उपवास स्वाध्याय, बाणी का पाठ (चिन्तन) इत्यादि परिवारिक सभी जीवों को ही मिल कर करना श्रेष्ठ है । नाचने-कूदने अथवा रोने-पीटने से तो बुद्धि की विवेकता ही नष्ट हो जाती है और विवेकहीन बुद्धि का हर फैंसला अकल्याणकारी ही साबित होता है । साधन और आयु (समय) का नाश होता है अलग से । यह संसार एक जेलखाना ही है यहां कोई किसी का नहीं है । सब अपनी-2 सजा ही काट रहे हैं न ही आत्मा का कोई सम्बन्धी (स्त्री-पुरुष, पुत्र, मां-बाप इत्यादि) हैं । ये तो एक अग्नि की चिन्गारी मात्र ही हैं । जो कुछ समय के लिये आग से अलग दृश्टिगोचर हो रही हैं । इसने एक समय फिर उस अपने मूल में ही समा जाना हैं । अब अग्नि पवित्र है तो चिन्गारी कैसे मैली हो सकती है । बीच में ही कुछ मैला सा जो दिखता है वही भ्रम है और भ्रम इसकी प्रसन्नता से ही दूर होता है । "सचे आपणा खेल रचाइया,आवागउण पसारा ।" "रूप न रेख न रंग किछ त्रिह गुण ते प्रभ भिन्न। तिसहि बुझाए नानका जिस होवै सुप्रसन्न ।" अब तक यह भ्रम है जीव ठीक वैसे ही दुख-सुख

महसूस करता है जैसे सुषुप्ति अवस्था में । उस अवस्था से बचने का क्या उपाय है ? केवल जीव को सुषुप्ती से जगा देना बस सभी विकार जो भ्रम से बने हैं दूर हो जाते हैं । ये ही मकसद रूहानियत में परमार्थ का है । केवल अपनी पहचान ही आत्मा का कल्याण करने में सक्षम है । वेदों में अहंब्रह्मस्मी, तत्तसमी आदि मंत्रों का भी यही भाव है कि तू परमात्मा का अंश, तू वही है । "आपणा आपि न पछाणहि संतहु कूड़ि करहि वडिआई । पाखंडि कीनै जम नहीं छोडै लै जासी पति गवाई । जिन अंतरि सबद आप पछाणहि गति मिति तिन ही पाई ।" (३-९१०) जन्म तथा मृत्यु उसी के खेल का एक अंग है तथा विचार से ही केवल इसमें लाभ प्राप्त किया जा सकता है । और इसी का प्रयोग हम संसार चिन्तन में करते हैं यही बन्धन पैदा करता है यदि इस का सदुपयोग अर्थात ईश चिन्तन मे कर दें तो सभी बाधायें अपने आप दूर होने लगती हैं पर जीते जी जीव इस माया की नींद से जागने का प्रयास ही नहीं करता । "कह कबीर तब ही नर जागै जब जम का डंड मूंड में लागै ।" पर उस वक्त सिर्फ रोना पीटना ही हाथ आता है और इसके सिवाय ये कुछ भी नहीं कर सकता । अनुभवी रूहें तो पुकार-2 कर इसे जगाती ही हैं "नानक कहत पुकार के गृह प्रभ सरणाई ।" पर यह होमै में ही विचरना पसन्द करता है । यही नतीजा निकलता है कि आत्मा स्वंय ही अपनी मित्र अथवा दुश्मन

है दूसरों को दोष देना केवल हौमे का अंग मात्र ही है । कुल बंदोबस्त इसके कल्याण का इस घट में ही मौजूद है फिर भी यह उसका अंश हो करके दर-2 की ठोकरें खा रही है । इसे इसकी सिआणत नही तो और क्या कहेंगे । ये बाहर सुख ढूंढती फिरती है जो बाहर है नहीं इसे मिल कैसे सकता है । जहां है वहां ये जाना नहीं चाहती यानी यदि यह शरीर को मर्यादा में रख कर बाहर मुखी से अन्तरमुखी हो जाये तो इसे अपने अन्दर रखे खजाने का पता चल सकता है । पर इसे तो बाहर आर्शीवाद चाहिये ! यदि इन सब चोचलों से कुछ बन सकता होता तो ये सृष्टि कब की खाली हो चुकी होती लेकिन आप देखते ही हैं कि ये तो दिन-प्रतिदिन अधिक रोशन होती जा रही है । इसी से सिद्ध होता है कि चालाकी-कपट से लाभ के बदले चोटें ही खानी पड़ेंगी । अर्थात भेद है सरल बुद्धि होने में । "निरमल मन जन सो मोहि पावा । मोहे कपट-छल छिद्र न भावा ।" दिनों दिन बढ़ती कपट इसे सरल बुद्धि होने के बदले फंसाती ही चली जाती है। और सिद्धियां इसें जीवन ही समझती रहती हैं बाहर इकट्ठी इन भीड़ों की शक्लें देखो ? क्या सुपने में भी इन्हें गुमान है कि ये जीवन मुक्त से नीचे की श्रेणी में विचर रहे हैं, यही होमै है "हउमै दीरघ रोग है दारू भी इस माहि । किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबद कमाहि ।" पर दवाई ये बाहर तलाश करती है जिस से ये

रोग तो क्या दूर होना है बढ़ता ही जाता है। "सतनाम निज औषधि सतिगुरू देइ बताई । औषधि खाये और पथ रहे ताकी वेदन जाये ।" अब एक दवाई तो ये तब खाये जब अपने को रोगी जाने जब रोगी ही नहीं तो पथ कैसा ? है न कमाल ! "जो-जो दीसै सोई रोगी, रोग रहित मेरा सतिगुर जोगी ।" और स्वंय को अरोगी तथा शेष सभी को रोगी जान यही जीवन मुक्त समझती है कि ये दवा दूसरों के लिये ही है । काश यह जागती और अपने को पहचानती । फिर यही सिर्फ "पथ" को ही अपनाये तो इस पर विचार किया जा सकता था यह "पथ" ही "रहत मर्यादा" है अतः इसे ही दृढ़ निश्चयी हो अपनाने में आत्मा का कल्याण है तभी दवाई भी लगेगी वरना खाई न खाई एक जैसी ।